

Padma Shri



SANT BABA IQBAL SINGH JI (POSTHUMOUS)

Sant Baba Iqbal Singh Ji was widely recognized as the pioneer of values-based education method at 129 CBSE affiliated rural schools in the villages of Punjab, Haryana, Rajasthan, Uttar Pradesh and Himachal Pradesh. He was the President of The Kalgidhar Trust Baru Sahib; Chancellor, Eternal University Baru Sahib, Himachal Pradesh; Akal University Talwandi Sabo, Bathinda and Chief Mentor of a chain of rural school system, Akal Academy.

2. Born on 1st May, 1926, Sant Iqbal Singh Ji was postgraduate in Agricultural Sciences from Khalsa College Amritsar and served as Director of Agriculture, Government of Himachal Pradesh. He sowed the seed of rural education from a hut with five students in 1986-87 with just Rs 2,200/- as his savings as the investment in a project that scaled up from Hut to 129 rural schools, 2 rural universities and 70,000+ students. This became a case study of bringing social impact at scale at IIM Ahmedabad, also published in Harvard Business Review in 2018.

3. Sant Iqbal Singh Ji propounded socio-economic development through quality education, a massive scale model that built a new paradigm in outpacing the ripple effect of home grown impact that became subject of study in business management academia. This has made Gurukul way of teaching from Kindergarten to University level, contemporary and people focussed. These schools based on faith and tradition imparts quality education with all modern gadgets at the village doorstep. These Gurukuls blend spiritual way of life with modern day science. Such robust is the model that switch to online mode of teaching was as received equally well by the students and teachers alike. Under his leadership, The Kalgidhar Trust was acknowledged by United Nations Development Programme (UNDP) with Sustainable Development Goal (SDG) commendation in 2020. In light of Sustainability Development Goals Orientation 2030, successful implementation of electrification of teaching infrastructure through solar power is a true green evolution from the hinterlands of Punjab.

4. Sant Iqbal Singh Ji had made drug de-addiction as his personal cause and had been practising naturopathy efficaciously. This method has been documented in two books professing managing different signs, symptoms and psychological disbalances in addicts and family, community and society. Various institutions established under his guidance include 129 Akal Academies, 2 Universities, 2 Akal Gurmat Sangeet Vidyalya, 1 Women Empowerment Center, 1 Charitable Hospital, 3 drug de-addiction centers, 13 Gurdwaras and various other philanthropic projects.

5. Sant Iqbal Singh Ji was recipient of many recognitions including Maharishi Valmiki Sampooran Swachhta Purskaar 2014; Lifetime Achievement Award by the National Institute of Cleanliness Education Research (NICER); Vidya Martand Award; Shiromani Panth Ratan Award by Takhat Sri Harimandir Ji (Patna Sahib) in 2018; Sikh Lifetime Achievement Award by Sikh Awards 2016 (UK); 5th Most Influential Sikh Award by the Top 100 Sikh Organizations (UK); Sri Guru Nanak Dev Ji Achievers Award by Government of Punjab. He has been signatory to Historic Peace Agreement 2014 at Carlson Los Angeles. He participated in 'Workshop on Global Development and Institutions Inspired by Faith' in South and Central Asia in Dhaka organized by Berkley Center for Religion, Peace, and World Affairs, Georgetown University, Washington, USA. He has also been honoured by Government of Punjab for extraordinary achievements and service towards the society in 2019.

6. Sant Iqbal Singh Ji passed away on 29th January, 2022.

पद्म श्री



संत बाबा इकबाल सिंह जी (मरणोपरांत)

संत बाबा इकबाल सिंह जी पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश के गांवों में 129 सीबीएसई संबद्ध ग्रामीण स्कूलों में मूल्य-आधारित शिक्षा पद्धति के मार्ग प्रवर्तक के रूप में अत्यंत विख्यात थे। वे कलगीधर ट्रस्ट बारू साहिब के अध्यक्ष; इंटरनल यूनिवर्सिटी बारू साहिब, हिमाचल प्रदेश के चांसलर; अकाल विश्वविद्यालय तलवंडी साबो, बठिंडा और ग्रामीण स्कूल व्यवस्था की एक शृंखला अकाल अकादमी के मुख्य संरक्षक थे।

2. 1 मई 1926 को जन्में, संत इकबाल सिंह जी, खालसा कॉलेज अमृतसर से कृषि विज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएट थे और उन्होंने हिमाचल प्रदेश सरकार के कृषि निदेशक के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1986-87 में सिर्फ 2,200 रुपये की अपनी बचत से पांच छात्रों के साथ एक झोपड़ी से ग्रामीण शिक्षा का बीज बोया, जो एक झोपड़ी से 129 ग्रामीण स्कूलों, 2 ग्रामीण विश्वविद्यालयों और 70,000 से अधिक छात्रों तक फैली एक परियोजना में उनका निवेश थी। यह आईआईएम अहमदाबाद में बड़े पैमाने पर सामाजिक प्रभाव पैदा करने का केस स्टडी बन गया, जिसे 2018 में हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू में भी प्रकाशित किया गया।

3. संत इकबाल सिंह जी ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के जरिये सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रतिपादित किया, यह एक बड़े पैमाने का मॉडल था जिसने घरेलू प्रभाव के परिणाम से आगे निकलने में एक नया प्रतिमान बनाया, जो बिजनेस मैनेजमेंट शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन का विषय बन गया। इसने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को किंडरगार्टन से विश्वविद्यालय स्तर तक समकालीन और जन केंद्रित बना दिया है। आस्था और परंपरा पर आधारित ये स्कूल, गांव में ही सभी आधुनिक गैजेट्स के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं। ये गुरुकुल आध्यात्मिक जीवन शैली को आधुनिक विज्ञान के साथ मिश्रित करते हैं। यह मॉडल इतना मजबूत है कि शिक्षा के ऑनलाइन मोड में जाना छात्रों और शिक्षकों के लिए समान रूप से सहज था। उनके नेतृत्व में, कलगीधर ट्रस्ट को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा 2020 में सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) प्रशस्ति के साथ मान्यता दी गई। सरस्टेनेबिलिटी डेवलपमेंट गोल्स ओरिएंटेशन 2030 के मद्देनज़र, सौर ऊर्जा के माध्यम से अध्यापन अवसंरचना का विद्युतीकरण पंजाब के अंदरूनी इलाकों में एक असली हरित क्रांति था।

4. संत इकबाल सिंह जी ने नशामुक्ति को अपना व्यक्तिगत मकसद बना लिया था और वे प्राकृतिक चिकित्सा का प्रभावी तरीके से अभ्यास कर रहे थे। इस विधि को दो पुस्तकों में शामिल किया गया है, जिनमें व्यसनियों और परिवार, समुदाय तथा समाज में विभिन्न संकेतों, लक्षणों और मनोवैज्ञानिक असंतुलन को प्रबंधित करने का दावा किया गया है। उनके मार्गदर्शन में स्थापित विभिन्न संस्थानों में 129 अकाल अकादमियां, 2 विश्वविद्यालय, 2 अकाल गुरुमत संगीत विद्यालय, 1 महिला सशक्तीकरण केंद्र, 1 धर्मार्थ अस्पताल, 3 नशा मुक्ति केंद्र, 13 गुरुद्वारे और कई अन्य परोपकारी परियोजनाएं शामिल हैं।

5. संत इकबाल सिंह जी को कई सम्मान मिल चुके हैं, जिनमें महर्षि वाल्मीकि संपूर्ण स्वच्छता पुरस्कार 2014; राष्ट्रीय स्वच्छता शिक्षा अनुसंधान संस्थान (एनआईसीईआर) द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार; विद्या मार्तण्ड पुरस्कार; 2018 में तख्त श्री हरमिंदर जी (पटना साहिब) द्वारा शिरोमणि पंथ रतन पुरस्कार; सिख अवार्ड्स 2016 (यूके) द्वारा सिख लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड; शीर्ष 100 सिख संगठन (यूके) द्वारा पांचवां सबसे प्रभावशाली सिख पुरस्कार; पंजाब सरकार द्वारा श्री गुरु नानक देव जी अचीवर्स अवार्ड, शामिल हैं। वे कार्लसन लॉस एंजिल्स में ऐतिहासिक शांति समझौते 2014 के हस्ताक्षरकर्ता रहे हैं। उन्होंने बर्कले सेंटर फॉर रिलिजन, पीस एंड वर्ल्ड अफेयर्स, जॉर्ज टाउन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन, यूएसए द्वारा आयोजित ढाका में दक्षिण व मध्य एशिया में 'वर्कशॉप ऑन ग्लोबल डेवलपमेंट एंड इंस्टीट्यूशंस इंस्पायर्ड बाय फेथ' में भाग लिया। उन्हें 2019 में समाज के प्रति असाधारण उपलब्धियों और सेवा के लिए पंजाब सरकार द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

6. संत इकबाल सिंह जी का 29 जनवरी, 2022 को देहावसान हो गया।